(प्र.10) अध्यापक की अभिप्रेरक भूमिका :-

अधिगम अभिप्रेरणा में अध्यापक एक महत्वपूर्ण पहलू है जो छात्रों को अभिप्रेरित कर उन्हें मार्ग प्रशस्त करता है शिक्षक देखता है कि बालक में कौन सी खूबियाँ और कौन से अवगुण शिक्षक का दायित्व बनाता है कि वह बालकों के गुणों को विकसित करे और अवगुणों का प्रक्षालन करे। शिक्षक बालकों की योग्यता एवं रुचि को पहचाने और सही दिशा की ओर बालक को अभिप्रेरित करे जिससे छात्रों का विकास सही दिशा में हो बालक कच्ची मिट्टी होता है और शिक्षक उसे आकार देता है शिक्षक को छात्र की प्रतिभा की पहचान होती है और वह उसी प्रतिभा को तराशता है जिससे बालक निखर कर आता है। अतः अध्यापक अधिगम का महत्वपूर्ण आधार स्तम्भ है जिसके हाथों में सृजन शक्ति होती है और निर्माण तथा विध्वंस दोनों ही उसके हाथ में संभव है। शिक्षक को प्रेरणादायक के रूप में मनोवैज्ञानिक अध्ययन भी बड़ी ध्यान के साथ करना होगा क्योंकि प्रत्येक बालक की अपनी अपनी क्षमता और प्रतिभा होती है जिसको निखारना एक अनुमान होता ही महत्वपूर्ण है शिक्षक अभिप्रेरणा का मुख्य स्त्रोत है।

III) पुरस्कार एवं दंड — पुरस्कार एवं दंड ये दोनों ही अभिप्रेरणा के लिए दोनों अनुकूल व्यवहार के लिए आवश्यक है। औसत एवं कुछ छात्रों को पुरस्कार देकर उनके मनोबल को उठाने के लिए आवश्यक परन्तु कभी-कभी सही रास्ते पर बालकों को लाने के लिए दंड की आवश्यकता होती है जिससे बालक भय के कारण अपना कार्य करता है या रुकने के लिए अभिप्रेरित होता है परन्तु दंड देने में सावधानी रखनी होगी क्योंकि कभी कभी बालक दंड के डर से पलायन कर जाते है जिससे बालकों का मानसिक आहार में लटक जाता है। पुरस्कार भी सोच समझ करना ही देना चाहिए नहीं तो बालक केवल पुरस्कार के लालच में काम करेगा। अतः दोनों सोच समझ कर ही देना चाहिए। इन से हानि एवं लाभ निम्न

लाभ — (I) पुरस्कार आनंद प्राप्त होता है और अधिगम के लिए प्रोत्साहन मिलता है।

(II) रुचि एवं उत्साह बढ़ते हैं

(III) बालकों का मनोबल ऊँचा एवं साहस भरता है

(IV) पुरस्कार कार्य करने के लिए प्रेरित करता है।



Scanned with CamScanner

[illegible] (i) बालक केवल पुरस्कार के लिए कार्य करते हैं (ii) बालक पुरस्कार प्राप्ति के लिए अनेक [illegible] का प्रयोग करते हैं
बालक अपना बहुमूल्य समय पुरस्कार प्राप्त करने बारे में ही सोचता है

ठीक इसी प्रकार दण्ड भी बहुत सोच समझ कर देना चाहिए जिससे बालकों में साकारात्मक दिशा निर्देशन हो

(iv) प्रतियोगिता :- कभी कभी प्रतिस्पर्धा या प्रतियोगिता भी अच्छे अभिप्रेरक का कार्य करते हैं। यह व्यक्तिगत व सामूहिक स्तर पर अधिक प्रभावशाली होती है व्यक्तिगत में जहाँ आगे बढ़ने के लिए अभिप्रेरणा मिलती है वहीं अन्य के प्रति [illegible] की भावना भी उत्पन्न होती है लेकिन सामूहिक अभिप्रेरणा विजय की ओर ले जाती है जैसे किसी खेल में सामूहिक अभिप्रेरणा आपसी मतभेद भुलाकर जीत पर अपनी [illegible] लगाती है टीम के जितने भी खिलाड़ी रहते हैं सभी का उद्देश्य एक जीत हासिल करना होता है।

(v) सफलता का ज्ञान :- सफलता का ज्ञान अगर बता दिया जाए तो अधिगम करते हुए [illegible] अभिप्रेरक का कार्य करता है जिससे अधिक उत्साह के साथ आगे बढ़ता है इस प्रकार देखें तो अभिप्रेरणा को प्रभावित करने वाला कारक